विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -26 - 12- 2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज कारक के बारे में अध्ययन करेंगे ।

अपादान कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का भाव प्रकट हो, वहाँ अपादान कारक होता है। इसका 'परसर्ग' से होता है। जैसे-

- चिड़िया पेड़ **से** उड़ गई।
- पहाड़ों **पे** झरना बहा।

6. संबंध कारक – संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। जैसे-

- यह मेरा कंप्यूटर है।
- वह नेहा का घर है।

7. अधिकरण कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार या उसके होने के स्थान का या समय का बोध होता है; उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे-

- **डाल पर** तोता बैठा है।
- बच्चे **कक्षा में** बैठे हैं।

8. संबोधन कारक – शब्द के जिस रूप में किसी को बुलाने या पुकारने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। संबोधन का अर्थ पुकारना। जैसे-

- अरे बबीत! इधर आओ।
- हे ईश्वर ! सबकी रक्षा करो।

कर्मकारक और संप्रदान कारक में अंतर

दोनों कारकों में 'को' परसर्ग का प्रयोग किया है, लेकिन दोनों में अंतर है; जैसे–

1. मैंने नेहा को पुस्तक दी (संप्रदान कारक)
2. मैं रजत को समझाऊँगा। (कर्म कारक)

पहले वाक्य में देने का भाव है, अतः संप्रदान कारक है।
दूसरे वाक्य में 'समझाने' क्रिया का फल रजत पर पड़ रहा है।